छायावाद साहित्य एवं मातृभूमि– शताब्दियों से गुलामी के बंधन में जकड़े हुए भारतवासियों में व्याप्त हीनता की भावना को दूर कर उसमें आत्मगौरव और आत्म–विश्वास का संचार करने के लिए भारत के स्वर्णिम अतीत का गौरवगान आवश्यक था। इसे अपनी पूर्णता तक पहुँचाने के लिए मातृभूमि वंदना, राष्ट्र–प्रेम एवं जागरण–संदेश के गीतों को भी जोड़ा गया है। महाकवि निराला 'खंडहर के प्रति' नामक कविता में भारत के महामानवों का स्मरण दिलाते हुए कहते हैं –

आर्त भारत! जनक हूँ मैं
जैमिनि, पतंजलि व्यास ऋषियों का,
मेरी ही गोद पर शैशव विनोद कर
तेरा ही बढाया मान
राम–कृष्ण भीमार्जुन भीष्म नर देवों ने।

छायावादी कवियों के राष्ट्रीय गीतों में राष्ट्रप्रेम और मातृभूमि वंदना की सीधी और सहज अभिव्यक्ति हुई है। प्रसाद के 'हिमाद्रि तुंग शृंग से' 'आंगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार'। निराला के 'भारति देश जय भारत देश', 'भारत माता ग्रामवासिनी' आदि गीतों को प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत किया जा सकता है। मातृभूमि की वंदना करते हुए प्रसाद जी गा उठते हैं –

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।

वसुधैव कुटुंबकम् का आदर्श पंत की इन पंक्तियों में दृष्टव्य है –

क्यों न एक हों मानव मानव सभी परस्पर,
मानवता निर्माण करें जग में लोकोत्तर।

इस प्रकार स्पष्ट है कि छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना की समुचित अभिव्यक्ति हुई है।

संरक्षक

प्रोफेसर संजय सिंह
कुलपति, बी.बी.ए.यू., लखनऊ

संकायाध्यक्ष
प्रो0 अरबिन्द कुमार झा

अध्यक्ष
डॉ0 सर्वेश सिंह

संयोजक, संगोष्ठी

डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, बी.बी.ए.यू., लखनऊ
मो0 9451087259, 8840333521

आयोजन सचिव

डॉ0 शिवशंकर यादव

सह–आयोजन सचिव

डॉ0 नमिता जैसल

डॉ0 प्रीति राय

आमंत्रण

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

(28 मार्च, 2019)

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करुणा
ESTABLISHED 1996

विषय: "छायावाद के सौ वर्ष : साहित्य एवं मातृभूमि"

आयोजक

हिन्दी विभाग
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ, उत्तर प्रदेश – 226025

कार्यक्रम स्थल : पर्यावरण विज्ञान विद्यापीठ सभागार, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

एक दिवसीय, राष्ट्रीय संगोष्ठी

छायावाद हिन्दी साहित्य के रोमांटिक उत्थान की वह काव्य-धारा है जो लगभग ई. स. १९१८ से १९३६ तक की प्रमुख युगवाणी रही। जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सुमित्रा नदंन पंत, महादेवी वर्मा इस काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। छायावाद नामकरण का श्रेय मुकुटधर पाण्डेय को जाता है। इन्होंने श्री शारदा पत्रिका में एक निबंध प्रकाशित किया जिस निबंध में उन्होंने छायावाद शब्द का प्रथम प्रयोग किया। कृति प्रेम, नारी प्रेम, मानवीकरण, सांस्कृतिक जागरण, कल्पना की प्रधानता आदि छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएं हैं।

परिचय- हिंदी कविता में छायावाद का युग द्विवेदी युग के बाद आया। द्विवेदी युग की कविता नीरस उपदेशात्मक और इतिवृत्तात्मक थी। छायावाद में इसके विरुद्ध विद्रोह करते हुए कल्पणाप्रधान, भावोन्मेशयुक्त कविता रची गई। ऐतिहासिक दृष्टि से जिसे गाँधीयुग कहा जाता है। साहित्यिक दृष्टि से उसे ही छायावादी युग की संज्ञा दी जाती है। तात्पर्य यह कि छायावादी काव्य गाँधी युग की मिट्टी में ही अंकुरित, पुष्पित ओर पल्लवित हुआ। गाँधीयुग राष्ट्रीय चेतना का उत्कर्ष काल था। उस समय भारतीय जनमानस में राष्ट्र-प्रेम का समुद्र हिलोरें मार रहा था। अतः छायावादी काव्य से यह आशा करना स्वाभाविक ही था कि वह अपने युग का प्रतिनिधित्व करते हुए राष्ट्रीय चेतना की पूर्ण अभिव्यक्ति करे किन्तु छायावादी काव्य के संबंध में यह आम धारणा है कि उसने अपने युग को प्रतिबिंबित करने या उसका प्रतिनिधित्व करने की बजाय उसकी उपेक्षा ही की है। इस धारणा की पुष्टि करते हुए कहा जाता है कि जिस समय देश की जनता स्वतंत्रता संग्राम में जूझते हुए अंग्रेजों के अत्याचारों की पीड़ा झेल रही थी, छायावादी कवि 'स्वप्न लोक' में कल्पना की कूची से रंगीन चित्र गढ़ने में लीन थे। छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति की मुख्य तीन भाव-भूमियाँ है - १. भारत के स्वर्णिम अतीत का गौरव-गान। २. भारती की वर्तमान दयनीय दशा का चित्रांकन ३. भारत के उज्ज्वल भविष्य का रूपांकन। इन तीनों भाव-भूमियों को एक सूत्र में बाँधने वाला कालक्रम ही नहीं मनोवैज्ञानिक क्रम भी है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी **"छायावाद के सौ वर्ष : साहित्य एवं मातृभूमि"** पर प्रस्तावित उपविषयः–

- कविता एवं मातृभूमि
- कथा एवं मातृभूमि
- चिंतन एवं मातृभूमि
- छायावाद पर पश्चिमी प्रभाव
- छायावाद और सांस्कृतिक जागरण
- छायावाद और भाषा
- छायावाद और नारी
- छायावाद एवं ऐतिहासिकता
- छायावाद और पत्रकारिता
- छायावाद और प्रसाद
- छायावाद और निराला
- छायावाद और पंत
- छायावाद और महादेवी वर्मा
- छायावाद का समग्र मूल्यांकन

पंजीकरण :– पंजीयन शुल्क शोधार्थी एवं शिक्षकों हेतु रू. 500/– मात्र है। पंजीकरण उक्त तिथि को संगोष्ठी के दौरान कराया जा सकता है।

नोट :– पंजीकरण उक्त तिथि से पूर्व हिन्दी विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर वि. वि., के कार्यालय में प्रातः 10:30 से सायं 05:30 बजे तक भी कराया जा सकता है।

शोध–प्रपत्र :– प्रस्तुत शोध प्रपत्र अधिकतम तीन हजार शब्दों में दिनाँक 20 मार्च 2019 तक ई–मेलः hindivibhagbbau@gmail.com, drbaljeetsrivastava@gmail.com पर भेंजे। संगोष्ठी के उपरांत चयनित शोध–पत्रों का प्रकाशन आई0एस0बी0एन0 द्वारा पुस्तकाकार के रूप में किया जायेगा।

कार्यक्रम विवरण

28 मार्च, 2019

उद्घाटन समारोह

10:00 – 12:00 बजे तक

प्रथम अकादमिक सत्र

12:00 – 01:30 बजे तक

द्वितीय अकादमिक सत्र

02:30 – 04:00 बजे तक

समापन समारोह

04:30 – 05:30 बजे तक